"गुरू विहीन"

• बाझ गुरु जगत बउराना भूला चोटा खाई । मरि मरि जमै सदा दुख पाए दर की खबरि न पाई ।1।

अर्थः- हे मन ! गुरू की शरण के बिना जगत विकारों में झल्ला हुआ फिरता है । गलत रास्ते पर पड़ के विकारों की चोटें खाता रहता है । बार - बार जनम - मरण के चक्करों में पड़ता है । सदा दुख सहता है । परमात्मा के दर की उसको कोई समझ नहीं पड़ती ।

मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा । हिरदै हरि नाम मीठा सद लागा गुर सबदे भवजल तरणा ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! सदा गुरू की शरण पड़ा रह । जो मनुष्य गुरू की शरण में टिका रहता है । उसको अपने हृदय में परमात्मा का नाम सदा प्यारा लगता है । गुरू के शबद से वह संसार - समुंद्र से पार लांघ जाता है ।

• भेख करै बहुत चित डोलै अंतरि काम क्रोध अहंकार ।
अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बार ।

अर्थः- हे मन ! जो मनुष्य गुरू की शरण से विछुड़ के कई धार्मिक भेष बनाता है । उसका मन विकारों में ही डोलता रहता है । उसके अंदर काम का जोर है । क्रोध प्रबल है । अहंकार प्रभावशाली है । उसके अंदर माया की बड़ी तृष्णा है । माया की बड़ी भूख है । वह कुत्ते की तरह रोटी की खातिर भौंकता फिरता है । हरेक घर के दर का दरवाजा खड़काता फिरता है ।

• गुर के सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआर ।
अंतरि सांत सदा सुख होवै हरि राखिआ उर धारि ।3। (3-1132)

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरू के शबद से विकारों की तरफ से मरते हैं । वे फिर आत्मिक जीवन हासिल कर लेते हैं । उनको विकारों से निजात मिल जाती है । परमात्मा के दर पर उनकी पहुँच हो जाती है । उनके अंदर शाति बनी रहती है उनके अंदर सदा आनंद बना रहता है । क्योंकि उन्होंने परमात्मा के नाम को अपने हृदय में टिका के रखा हुआ होता है ।

• मन रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ । गुरु नाम दृड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ।

अर्थः- हे बड़े भाग्य वालो ! गुरू की शरण पड़ कर अपना मन प्रभु के नाम रंग में रंग लो । गुरू प्रसन्न हो के नाम की यह बख्शिश करता है । गुरू प्यार से परमात्मा का नाम शरण आए सिख के हृदय में पक्का कर देता है । इस वजह से मैं गुरू से सदके जाता हूँ ।

बिन सतिगुर हरि नाम न लभई लख कोटी करम कमाउ ।2।

बिन भागा सतिगुर ना मिले घरि बैठिआ निकटि नित पासि ।

अर्थः- अगर मैं लाखों करोड़ों और धार्मिक कर्म करूँ तो भी सतगुरू की शरण के बिना परमात्मा का नाम प्राप्त नहीं होता । अच्छी किस्मत के बगैर गुरू नहीं मिलता और गुरू के बिना परमात्मा का मिलाप नहीं होता चाहे हमारे हृदय में बैठा हर वक्त हमारे नजदीक है हमारे पास है।

अंतरि अगिआन दुख भरम है विचि पड़दा दूरि पईआसि ।
बिन सतिगुर भेटे कंचन ना थीऐ मनमुख लोहु बूडा बेड़ी पासि

अर्थः- जिस जीव के अंदर अज्ञानता के अंधेरे का दुख टिका रहे जिसको माया भटकाती रहे उसके अंदर परमात्मा से माया के मोह का व भटकने का पर्दा बना रहता है । उसकी जीवात्मा अंदर बसते प्रभु से दूर पड़ी रहती है । अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य मानो लोहा है जो गुरू पारस को मिले बगैर सोना नहीं बन सकता । गुरू - बेड़ी उस मनमुख लोहे के पास ही है पर वह विकारों की नदी में डूबता है ।

सतिगुर बोहिथ हरि नाव है कित बिधि चड़िआ जाई । सतिगुर के भाणे जो चले विचि बोहिथ बैठा आइ । धन धन वडभागी नानका जिना सतिगुर लए मिलाई ।4। (4-40)

अर्थः- सतगुरु परमात्मा के नाम का जहाज है पर उस जहाज में चढ़ने का भी तरीका होना चाहिए फिर किस तरह उस जहाज में चढ़ा जाए ? जो मनुष्य सतिगुरू के हुकम में चलता है वह उस जहाज में सवार हो गया समझो । हे नानक ! वे मनुष्य बड़े भाग्यवान हैं, धन्य हैं - धन्य हैं जिन को सतिगुरू प्रभु चरणों में मिला लेता है ।

• गुर बिन घोर अंधार गुरु बिन समझ न आवै । गुर बिन सुरति न सिधि गुरु बिन मुकति न पावै ।

अर्थः- सतिगुरू की शरण पड़े बिना मनुष्य के जीवन की राह में अंधकार ही अंधकार है । गुरू के बिना सही जीवन की समझ प्राप्त नहीं हो

सकती । गुरू के बिना सुरत ऊँची नहीं होती और जीवन संग्राम में सफलता प्राप्त नहीं होती । गुरू के बिना विकारों से खलासी नहीं मिलती ।

गुरु कर सच बीचार गुरु घर रे मन मेरे । गुरु कर सबद संपुन अघन कटहि सभ तेरे ।

अर्थः- हे मेरे मन ! सतिगुरू की शरण पड़ । यही उत्तम विचार है । शबद के शूरवीर गुरू की शरण पड़ तेरे सारे पाप कट जाएंगे ।

गुरु नयणि बयणि गुर गुर करहु गुरु सति कति नल्य कहि । जिन गुरु न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ।4।8। (4-1399)

अर्थः- कवि नॅल् कहता है, हे मेरे मन ! अपनी आँखों में अपने बोलों में केवल गुरू को ही बसाओ गुरू सदा - स्थिर रहने वाला है । जिस - जिस मनुष्य ने सतिगुरू के दर्शन नहीं किए और जो - जो मनुष्य सतिगुरू की शरण नहीं पड़ा वह सारे संसार में निष्फल ही आए ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"